

DPN 6264

Title : वंशीधराचर्चन VANŚIDHARĀRĀRĀNA

Run. No. 6955

Cat. No. 64

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 29 x 11

Folios 7

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ Rajendra
Shreshtha

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ ततो द्वादशतारायणाचर्चनं ॥ आचम्य ॥ आसनं ॥ ॐ ह्रीं आत्मने इमदमासनं नमः ॥

Δ ॐ तवीन तीरदशमं नीलेन्दीवर लोचनं ॥ बलहवी नन्दनं वन्दे कृष्णं गोपाल रूपिरां ॥
वेदः ॥ ॐ त्रीणि पदाणि ॥ इति वंशीधराच्यनं ॥ ५

ॐ धनं नमः स्वाहा ॥ ॐ धनं नमः स्वाहा ॥ ॐ धनं नमः स्वाहा ॥ १

१ नमः द्वादशनाम यन्मन्त्रं ॥ आर्यं ॥ आसनी ॥ ॐ ह्रीं आत्मनः हृदमासनी नमः ॥ ॐ ह्रीं आत्मनः पृथ्वी
नमः ॥ न्यासः ॥ ॐ ह्रीं नमः दीर्घा दीर्घा ॥ त्वादि न्यासः ॥ नमः अर्यया नमः ॥ आत्मनः ॥ ॥ आस
नी ॥ ॐ ह्रीं कर्मावायः श्रीसहिताय नमः ॥ ॐ ह्रीं नागाय नमः वागीश्वरीसहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं माधवाय
कान्तीसहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं गवितायः किर्यासहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं विष्णवे गान्तीसहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं म
धुसूदनायः विरूपासहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं निविक्रमायः ॥ कासहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं वामनायः श्रीस
हिताय २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीधरायः वरिसहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं हृषीकेशायः मायासहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं यमना
रायः धनिसहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं दामोदरायः सहिमासहिताय २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीदिवादादगगकि सहिता
नाय २ ॥ ॐ ह्रीं यमनारायः सगलयविवाताय २ ॥ ॐ ह्रीं कर्मावादि द्वादशनाम यन्मन्त्रं २ ॥ ह्रीं

五

२ अस्यावक्तामपि ननु ह्युक्तं न त्वगीदवता
भीवीर्जरुदं किं स्वादाकीलकं ॥

यादि॥ आवाहनादि॥ नेवर्षी॥ उं हूं ३ वृंदमिदं बलिं गृह्णाग स्वाहा॥ रुच्यनेवर्षी २ कचनेवर्षी २॥
जयस्तु॥ यस्तु रुक्मिणि॥ वद॥ उं हूं दं विष्णु॥ वृत्ति॥ ॥ दुवयातास्तं ८ कुसुमं॥ ॥
ततो नीलसप्तस्वगीयका॥ आचम्य॥ न्यास॥ उं स्वाहा अम्ना यरुह॥ उं श्रीं हृदयाय नमः॥ कुं
लिवसं स्वाहा॥ स्तौति स्त्रियाये वेषट्॥ हूं रुद्र कवचाय हूं॥ उं स्वाहा अम्ना यरुह॥ तनूर्जग न्यास
॥ तनोर्धपायुकात्मयका॥ ततो आसनं तन हृदयादिना॥ आधीन गकि ८॥ ततो ध्यानं॥
उं मन्त्राक्तिर्नैव (अ) ध्यायं दवीं सर्वसिद्धिदां॥ यन्मणिं गिरः गूलमस्ति कवाडुं दधती रुजं॥ पाथ
यकी पादगुलं यलुं वलु कलाधरी॥ ध्यानपूर्य्य २॥ शुक्ललि॥ उं श्रीं कुं स्तौ हूं रुद्र स्वाहा॥ पुर्व
हृदयादि॥ नेवर्षी॥ जय॥ उं श्रीं कुं स्तौ हूं रुद्र स्वाहा॥ स्तौति॥ उं सप्तस्वति मदाहाग॥ वद॥

समा २

उं घावकान ४ स ॥ ॐ ति ॥ ॥ ॥ ते ४ गी क व ना नाय न च्च नी ॥ आव म्य ॥ न्या सा र्घ या रु य जा त्म
 पू जा ॥ न त आ स नी ॥ उं डो ऊ या ये २ ॥ ७ ॥ उं डो आ धा य ति ७ ॥ उं डो वृ ष णां ये न म ४ ॥ उं डो ग न
 ठा स ना य २ ॥ उं डो ग ङ्ग व ना नाय न य २ ॥ न ता ध्या नी ॥ उं वृ ष ण ग नू उ सं स्कं म ख ला क ठि रु
 धि र्गं । स र्घ कृ णु ल (ग) रा द्यं ऊ ण र व (उ) नू ण र व र्गं ॥ उं गू ल वा कू र्गं व वी म च च कू र्गं र व या ४
 । नु व मा दी न्य न कालं संचि रं सर्व का म दं ॥ उं डो ग ङ्ग व ना नाय न य ध्या न पू र्ण न म ४ ॥ ॐ
 लि ४ ॥ हृ द या दि पू जा ॥ ने व र्गं ॥ जा य क्ता र्गं ॥ यो हो र्गं र व क या ल रू ष ण क री मा ला स्त्रि मा ला ध
 री द वो द्या व व नी म सा न नि ल यो ना ग्म वि ण वा ह नो । द्वि गु णो व लि द क य रू म थ नो गु । त्रि ल
 जा व न्त्रो पा र्घ म द्वा र्गं स द्वा र वि रु गो व त्स ग ङ्ग ध री ॥ व द ॥ उं न म ४ र्गं र वा य ॥ उं ॐ दं वि

नायः ॐ नैव यं नमः ॥ ॥ गायत्री ॥ ॐ कौ विष्णु वाय विष्णु नावाय वाय धीमहि । न न्ना विष्णु
 ४ पु वा दया ॥ ३ ॥ ॥ न न्ना वाय वाय ॥ द न्ना ॥ ॐ कौ स ४ मत्स्या नमः ॥ ॐ कौ क मा य २ ॥
 ॐ कौ स ४ व वा दया २ ॥ ॐ कौ स ४ न व र्ति दया २ ॥ ॐ कौ स ४ वा म ना य २ ॥ ॐ कौ स ४ घ व गु वा मा य २
 ॥ ॐ कौ स ४ वा मा य २ ॥ ॐ कौ स ४ व ल रु द्रा य २ ॥ ॐ कौ स ४ वृ द्वा य २ ॥ ॐ कौ स ४ क ल्कि न २ ॥ य वा दि
 ॥ १० ॥ न न्ना ४ य गु षू ॥ कौ ज या ये २ ॥ कौ वि ज या ये २ ॥ कौ अ जि ना ये २ ॥ कौ अ प वा जि ना ये २ ॥ कौ
 ॐ क्का द धी २ ॥ कौ नि ह्या ये २ ॥ कौ क्रि या ये २ ॥ कौ वि द्या ये २ ॥ य वा दि ६ ॥ द्वा द श क म ल षू ॥ ॐ क
 न वा य व द्म मूर्त्त य न मः ॥ ॐ ना वा य वा य विष्णु मूर्त्त य २ ॥ ॐ मो ध वा य वा य व न मूर्त्त य २ ॥ ॐ
 ग वि द्या य क्रि ति मूर्त्त य २ ॥ ॐ विष्णु व द्म मूर्त्त य २ ॥ ॐ म धू सू द ना य वा य मूर्त्त य २ ॥ ॐ ति

विक्रमाय जल मूर्त्त य २ ॥ ॐ वा म ना य ल ल मूर्त्त य २ ॥ ॐ ग्री ध वा य नि नि मूर्त्त य २ ॥ ॐ रु षी क मा य व
 द्म मूर्त्त य २ ॥ ॐ प द्म ना रा य मूर्त्त य २ ॥ ॐ दा मा द वा य अ नि मूर्त्त य २ ॥ ॐ पू र्वा रु मा य वृ द्म
 मूर्त्त य २ ॥ १२ ॥ ॥ व द्म मूर्त्त य २ ॥ ग ग ल य न य न मः ॥ ॐ गु व व २ ॥ द्वा द श वा ना य २ ॥ कौ क रु पा ला
 य २ ॥ अ न्ना दि ॐ न्ना ना के ॥ ४ ॥ ॥ द्वा द श ॥ य व ॥ ॐ कौ ज या य २ ॥ ॐ वै वि ज या य २ ॥ द न्ना ॥ ॐ
 व गु य २ ॥ ॐ प व गु य २ ॥ य वि म ॥ ॐ धा न २ ॥ ॐ वि धा न २ ॥ उ न्ना ॥ ॐ रु द्रा य २ ॥ ॐ म रु द्रा य २
 ॥ ६ ॥ आ वा रु ना दि ॥ ध न्म मूर्त्त य २ ॥ नै व य ॥ ज या ४ ॥ ॐ कौ स ४ स्वा रु ॥ १० ॥ ऊ र्ध्व रु द्म स्वा रु ॥ स
 ॥ ॐ न्ना ॥ न्ना वा सी रु न व द्म रु द्म रु द्म काली रु नि मर्द्द न व । क द म्ब मा ला रु न क ल ल न्ना ॥ ग
 पाल व ग म्ब व ल प य ॥ अ न्ना ॥ धा दि ॥ व द्म ॥ ॐ न्ना विष्णु ४ ॥ ॐ ति ग्री ज या ना वा य वा य नै ॥

॥ ॥ ॥ तालक्ष्मीनामाय नमः ॥ आ व म् ॥ उं पु धा न त त्वा य स्वा हा ॥ उं पु नू ष त्वा य स्वा हा ॥
 उं ॐ ग त्वा य स्वा हा ॥ आ स नी ॥ उं ऊं आ त्म न ॐ द मा स नी न म ॥ ऊं आ त्म न पू र्ण न म ॥ न्या स
 ॥ उं न म ॥ अ म्ना य रु द ॥ उं ह न म ॥ दं स ॥ उ वि स द ह द या य २ ॥ ऊं न म ॥ य न व स्र गि त स स्वा
 हा ॥ ऊं न म ॥ य धा दि ता न जि खा ये वो ष द ॥ ऊं न म ॥ ग्वा ष त स व ष क व वा य ह ॥ ह्रीं न म ॥ य
 का ग पु क ल न र उ या य व ष द ॥ ह्रीं न म ॥ द्यो पा दा य प रु अ म्ना य रु द ॥ त नै व क ना म्ना सा र्थ
 या य ष ऊ न ॥ त न आ स नी ॥ उं ऊं आ धा त र ग क थ न म ॥ ॐ त्या दि ॥ उं ऊं ग नू ज स ना य न म
 ॥ त ना ध्या नी ॥ उं ऊं गु ष्ट कृ टि क सी का गी रु षा व नि व या य मी ॥ न क व कुं वि ष्ण वा क म ष्ट वा द
 ध री रु त्रि ॥ द क्का ष्ट धो पू र्ण ध र्म द वी पू र्ण त था य त्र ॥ उ व त्पी य ष सी का सी ग म्ना कृ ग त न ऊ र्ण ॥

५

हस्तैर्विभक्तं त्रिंशत्तुल्यं गङ्गा नदी च वक्रा विविधा यन्मादलो क न क क ल गी म य वि श्रु द्धि ला गी ॥ वा मा रु द्र रु न म वि न ला क ल्य मा ॥ ल ष ला ला ॥ द की रु त्र वि पू र व रु
 अ म्ना ऊं च ग दा गी र्वी च र्कै र्वे व क ल त्प द ॥ द क्षि ण रु द्र ऊं व रु द वा म र्वे व त था ष्ट ॥ क ल गी द र्प णी ना
 ली पू र्ण क वा ष म्ना य न ॥ य न स र्वि स मा खा र्ण ॥ गी र्वी ग द र्वा म्ना य न ॥ न म्ना दि रु ग व न वि ष्ण ला का
 नू य रु का र्ण ॥ म्ना य रु ॥ सा म व द्वा त्म न वा स द व न मा मु न ॥ ल क्ष्मी ना मा य न ध्या य ॥ स र्व का म रु
 ल पु द ॥ स र्व पा प रु न द र्व स र्व स य कि दा य र्क ॥ उं ऊं गी ल क्ष्मी ना मा य न ध्या य न पू र्ण न म ॥ शु
 क्र लि ३ ॥ पू ज ॥ ह द या दि ॥ आ वा रु ना दि ॥ नै व र्थी ॥ उं ह्रीं ३ ॐ द मि दै व र्णि ग रु ण स्वा हा ॥ रु थ
 नै व र्थी २ ॥ क थ नै व र्थी २ ॥ ऊ य म्ना र्ण ॥ उं य त्प र्व ऊ न्म कृ त र्ण च य पा य ना गी इ ष्वा र्ण व नि य ति ता
 द व मा रु द ना ता ॥ ग ता सि स क ति म या क ल म्ना र्ण ॥ द वा धि द व रु व पा न द म पु सी द ॥ उं ल क्ष्मी ना
 मा य न ध्या य ॥ ॥ व द ॥ उं गी र्वी ॥ उं ॐ द वि ॥ ॐ ति ल क्ष्मी ना मा य न ध्या य ॥ ॥ नि र्म कृ र्ण ॥

वश्यं कृत्वा कल लक्ष्मी ॥ अम ॥

श्रीधननायक. लहानकस्य. यत्रिवार्षिक. सगंधवत्र. श्रीशुक्र. कादवीचन. विन्दूजा. कर्तुं श्रीकलमार्क. यार्धनमः॥ ९
 रत्नामाधवयूजा॥ आवम्य॥ आत्मासर्न॥ न्यासः॥ उं स्वाहा अस्माय रुद्रा उं हानमः॥ सगुवीति. क
 न न्यासः॥ उर्वरुदयादि॥ त नार्धयायूजात्मयूजा॥ त न आसर्न॥ उं कौ आधावादि ८॥ नृणां ध्याने॥
 उं सुदर्शनगदवाह. मधः॥ सथायसथा॥ सथा॥ कम्बुयध्व. माधवा वृक्षसंनिहः॥ माधवाय
 ध्यानपूर्व्यनमः॥ शुभ्रलिः॥ त न ध्युजने॥ उं हानमः॥ सगुवीति ९॥ आवाहनादि॥ नेवयूजाय
 स्तुति॥ उं यस्य रुद्रगदावकु॥ वदः॥ उं गीवियदाविव॥ ॥ श्री २ माधव. नीलमाधव. श्री. कृष्ण॥
 निमाधवयूजा॥ ॥ ॥ ०॥ त न ध्युजने॥ आवम्य॥ आत्मासर्न॥ न्यासः॥ उं श्री कौ श्री
 अस्माय रुद्रा॥ श्री कौ श्री रुद्रयाय २॥ श्री कौ श्री गिरिसखादा॥ श्री कौ श्री गिरिखोत्रे वीषट्॥ श्री कौ
 श्री कवचाय २॥ श्री कौ श्री नरुयाय वषट्॥ श्री कौ श्री अस्माय रुद्र॥ उर्वरुदयादि॥ त नार्ध

शुजलि ४४

पाण्डुयूजात्मयूजा॥ त न आसर्न॥ उं श्री आधावादि ८॥ त न ध्याने॥ उं उत्याद्योचसितदीध. सर्वस्मिन्
 रुद्रिहृमा. त न कल्पद्रुमाधस्ता. यकी तु वचितासन॥ गीरवकुगदाय न. पार्विचामीकरयुक्तिं।
 किनीतिर्न ककुलिर्न. श्रीवत्साकिरवकुसी॥ हदिल श्री धर्न ध्यायन्. श्रीधर्न पूरुषार्थदं॥ उं श्री कौ
 श्री श्रीधवाय रुद्रा. श्रीमहादेवाय ध्या. नपूर्व्यनमः॥ ॥ आवम्ययूजा॥ उं श्री सुवर्गवाय नमः॥ क
 ल्पकार्या॥ ॥ वदः॥ उं श्री श्रीवत्साय नमः॥ ददवकुत्तल॥ ॥ उं श्री कोमुताय २॥ वामवकु
 त्तल॥ ॥ श्रीवनमालाय २॥ श्रीवायी॥ ॥ श्रीमृकणाय २॥ मूर्ध्नि॥ ॥ श्रीपद्मिनाजाय २॥ क
 ल्पकार्या॥ ॥ श्रीपंकजनाथाय २॥ गङ्गाय २॥ ॥ श्रीपूषाकमाय २॥ श्रीलक्ष्मीनिवासाय २॥
 श्रीसकलजगन्नाथाय २॥ श्रीजगत्कान्ताय २॥ श्रीसर्वभूतदाया मादाय २॥ श्रीमहामादकाय

ॐ सवस्वत्ये २ ॥ ॥ तद्विषयं ॥ पूर्वदि ॥ ॐ वृक्षि ॥ ॐ सत्यमाये ॥ ॐ कालि ॥ ॐ नग्न ॥ ॐ
 ॥ ॐ मित्रविन्दाय ॥ ॐ सुलक्ष्मणे ॥ ॐ जाम्बवत्ये ॥ ॐ सुनीलाये ॥ ॥ अग ॥ ॐ धातुसदसुमहि
 षीत्या ॥ ॥ तद्विषयं ॥ पूर्वदि ॥ ॐ वृक्षि ॥ ॐ नीलनिधये ॥ ॐ मृकन्दनिधये ॥ ॐ मकरनिध
 ये ॥ ॐ आनन्दनिधये ॥ ॐ कृष्णनिधये ॥ ॐ रत्ननिधये ॥ ॐ यक्षनिधये ॥ ॐ कन्दनिधये ॥
 ॥ ॥ तद्विषयं ॥ ॐ वृक्षि ॥ ॐ अग्नये ॥ ॐ यमाये ॥ ॐ नेत्रहाये ॥ ॐ वृक्षि ॥ ॐ वायवे ॥ ॐ
 कृष्णाय ॥ ॐ वृक्षि ॥ ॐ आवाहनादि ॥ नेत्राय ॥ जायते ॥ ॐ कृष्णाय ॥ ॐ विन्दाय ॥ ॐ यीजन
 वल्लभाय स्वाहा ॥ १० ॥ स्तुति ॥ ॐ नवीननीवदध्यामी नालदीववलाचनी वल्लवीनन्दनीवन्द क
 र्णमालात्रयिणी ॥ वन्द ॥ ॐ गीतिपदावि ॥ वृत्तिवर्णाधमावर्तनी ॥ ॥ ० ॥